हिंदी

लोकभारती

दसवीं कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता–पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. २९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

हिंदी

लोकभारती

दसवीं कक्षा

मेरा नाम _____ है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

BH6CJ4

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन-अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१८
तीसरा पुनर्मुद्रण : २०२१

© **महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४**

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य – अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील – सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला – सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी – सदस्य
श्री रामहित यादव – सदस्य
श्री संतोष धोत्रे – सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी – सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे – सदस्य
डॉ.अलका पोतदार – सदस्य – सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

सौ. वृंदा कुलकर्णी
सौ. रंजना पिंगळे
डॉ. वर्षा पुनवटकर
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती शारदा बियाणी
श्रीमती माया कोथळीकर
डॉ. प्रमोद शुक्ल
श्री धन्यकुमार बिराजदार
श्री संजय भारद्वाज
डॉ. शुभदा मोघे
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. रीता सिंह
डॉ. शैला ललवाणी
सौ. शशिकला सरगर
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

निमंत्रित सदस्य
श्री ता.का. सूर्यवंशी
श्रीमती उमा ढेरे

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी-हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक-हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : मयूरा डफळ
चित्रांकन : श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र पांडलोसकर,सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2021-22/0.40
मुद्रक : M/s. Sahil Print Art, Thane

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो,

आपकी उत्सुकता एवं अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए नवनिर्मित लोकभारती दसवीं कक्षा की पुस्तक को रंगीन, आकर्षक एवं वैविध्यपूर्ण स्वरूप प्रदान किया गया है । रंग-बिरंगी, मनमोहक, ज्ञानवर्धक एवं कृतिप्रधान यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है ।

हमें ज्ञात है कि आपको गाना सुनना-पढ़ना, गुनगुनाना प्रिय है । कथा-कहानियों की दुनिया में विचरण करना मनोरंजक लगता है । आपकी इन मनोनुकूल भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इस पुस्तक में कविता, गीत, गजल, नई कविता, पद, बहुरंगी कहानियाँ, निबंध, हास्य-व्यंग्य, संस्मरण, साक्षात्कार, एकांकी आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश किया गया है । यही नहीं, हिंदी की अत्याधुनिक विधा 'हाइकु' को भी प्रथमतः इस पुस्तक में स्थान दिया गया है । ये विधाएँ केवल मनोरंजक ही नहीं अपितु ज्ञानार्जन, भाषाई कौशलों-क्षमताओं के विकास के साथ-साथ चरित्र निर्माण, राष्ट्रीय भावना को सदृढ़ करने तथा सक्षम बनाने के लिए भी आवश्यक रूप से दी गई हैं । इन रचनाओं के चयन का आधार आयु, रुचि, मनोविज्ञान, सामाजिक स्तर आदि को बनाया गया है ।

बदलती दुनिया की नई सोच, वैज्ञानिक दृष्टि तथा अभ्यास को सहज एवं सरल बनाने के लिए इन्हें संजाल, प्रवाह तालिका, विश्लेषण आदि विविध कृतियों, उपयोजित लेखन, भाषाबिंदु आदि के माध्यम से पाठ्यपुस्तक में समाहित किया गया है । आपकी सर्जना और पहल को ध्यान में रखते हुए क्षमताधारित श्रवणीय, संभाषणीय, पठनीय, लेखनीय द्वारा अध्ययन-अध्यापन को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है । आपके ज्ञान में अभिवृद्धि के लिए 'ऐप' के माध्यम से 'क्यू.आर.कोड,' में अतिरिक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी । अध्ययन अनुभव हेतु इसका निश्चित ही उपयोग हो सकेगा ।

मार्गदर्शक के बिना लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती । अतः आवश्यक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों का सहयोग तथा मार्गदर्शन आपके विद्यार्जन को सुकर एवं सफल बनाने में सहायक सिद्ध होगा । विश्वास है कि आप सब पाठ्यपुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि, आत्मीयता एवं उत्साह प्रदर्शित करेंगे ।

हार्दिक शुभकामनाएँ !

पुणे
दिनांक : १८ मार्च २०१८, गुढ़ीपाड़वा
भारतीय सौर दिनांक : २७ फाल्गुन १९३९

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-०४

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा है कि दसवीं कक्षा के अंत तक विद्यार्थियों में भाषा संबंधी निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों :

अ.क्र.	क्षमता	क्षमता विस्तार
१.	श्रवण	१. गद्य-पद्य की रसानुभूति एवं आकलन करते हुए सुनना/सुनाना । २. विविध माध्यमों के कार्यक्रमों का आकलन करते हुए सुनना तथा विश्लेषण करना । ३. प्राप्त वैश्विक जानकारी सुनकर तर्कसहित सुनाना ।
२.	भाषण-0. संभाषण	१. विविध कार्यक्रमों में सहभागी होकर संबंधित विषयों पर अपने विचार प्रकट करना । २. विभिन्न विषयों पर आत्मविश्वासपूर्वक, निर्भीकता के साथ मंतव्य प्रकट करना । ३. अंतरराष्ट्रीय विषयों पर विचार-विमर्श, चर्चा करना । ४. दैनिक व्यवहार में शुद्ध और मानक ध्वनियों के साथ स्वमत व्यक्त करना ।
३.	वाचन	१. आरोह-अवरोहयुक्त विरामचिह्नों के सही प्रयोग के साथ प्रभावोत्पादक प्रकट वाचन करना । २. गद्य-पद्य साहित्यिक विधाओं का विश्लेषण करते हुए अर्थपूर्ण वाचन करना । ३. हिंदीतर रचनाकारों की हिंदी रचनाओं का भाव एवं अर्थपूर्ण वाचन करना । ४. देश-विदेश के अनूदित लोकसाहित्य के संदर्भ में तुलनात्मक वाचन करना । ५. आकलन सहित गति के साथ मौन वाचन करना । अनुवाचन, मुखरवाचन, मौन वाचन का अभ्यास ।
४.	लेखन	१. स्वयंप्रेरणा से विरामचिह्नों सहित शुद्ध लेखन करना । स्वयंप्रेरणा से विविध प्रकार का सुडौल, सुपाठ्य, शुद्ध लेखन करना । २. अनुलेखन सुवाच्य लेखन, सुलेखन, शुद्ध लेखन, स्वयंस्फूर्त लेखन का क्रमशः अभ्यास करना । ३. स्वयंस्फूर्त भाव से रूपरेखा एवं शब्द संकेतों के आधार पर कहानी, निबंध, पत्र, विज्ञापन आदि का स्वतंत्र लेखन करना । ४. अपठित गद्यांशों, पद्यांशों पर आधारित प्रश्न निर्मिति करना ।
५.	भाषा अध्ययन (व्याकरण)	❋ छठी से दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भाषा अध्ययन के मुख्य घटक नीचे दिए गए हैं : प्रत्येक कक्षा के पाठ्यांशों पर आधारित चुने हुए घटकों को प्रसंगानुसार श्रेणीबद्ध रूप में समाविष्ट किया है । घटकों का चयन करते समय विद्यार्थियों की आयुसीमा, रुचि और पुनरावर्तन का अभ्यास आदि मुद्दों को ध्यान में रखा गया है । प्रत्येक कक्षा के लिए समाविष्ट किए गए घटकों की सूची संबंधित कक्षा की पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट की गई है । अपेक्षा है कि विद्यार्थियों में दसवीं कक्षा के अंत तक सभी घटकों की सर्वसामान्य समझ निर्माण होगी । समानार्थी, विरुद्धार्थी शब्द, लिंग, वचन, शब्दयुग्म, उपसर्ग, प्रत्यय, हिंदी-मराठी समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द, संज्ञा भेद, सर्वनाम भेद, विशेषण भेद, क्रिया भेद, अव्यय भेद, काल भेद, कारक, कारक चिह्न, उद्देश्य-विधेय और वाक्य परिवर्तन, विराम चिह्न, मुहावरे, कहावतें, वर्ण विच्छेद, वर्णमेल, संधि भेद, शब्द, वाक्य शुद्धीकरण, रचना के अनुसार तथा अर्थ के अनुसार वाक्य के भेद, कृदंत, तद्धित, शब्द समूह के लिए एक शब्द ।
६.	अध्ययन कौशल	१. सुवचन, उद्धरण, सुभाषित, मुहावरे, कहावतें आदि का संकलन करते हुए प्रयोग । २. विभिन्न स्रोतों से जानकारी का संकलन, टिप्पणी तैयार करना । ३. आकृति, आलेख, चित्र का स्पष्टीकरण करने हेतु मुद्दों का लेखन, प्रश्न निर्मिति करना । ४. विभिन्न विषयों पर स्फूर्तभाव से लिखित-मौखिक अभिव्यक्ति ।

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें .....

अध्ययन अनुभव देने से पहले क्षमता विधान, प्रस्तावना, परिशिष्ट, आवश्यक रचनाएँ एवं समग्र रूप से पाठ्यपुस्तक का अध्ययन आवश्यक है। किसी भी गद्य–पद्य के प्रारंभ के साथ ही कवि/लेखक परिचय, उनकी प्रमुख कृतियों और गद्य/पद्य के संदर्भ में विद्यार्थियों से चर्चा करना आवश्यक है। प्रत्येक पाठ की प्रस्तुति के उपरांत उसके आशय/भाव के दृढ़ीकरण हेतु प्रत्येक पाठ में 'शब्द संसार', विविध 'कृतियाँ', 'उपयोजित लेखन' अभिव्यक्ति, 'भाषा बिंदु', 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय' आदि कृतियाँ भी दी गई हैं। इनका सतत अभ्यास कराएँ।

सूचनानुसार कृतियों में संजाल, कृति पूर्ण करना, भाव/अर्थ/केंद्रीय भाव लेखन, पद्य विश्लेषण, कारण लेखन, प्रवाह तालिका, उचित घटनाक्रम लगाना, सूची तैयार करना, उपसर्ग/प्रत्यय, समोच्चारित–भिन्नार्थी शब्दों के अर्थ लिखना आदि विविध कृतियाँ दी गई हैं। ये सभी कृतियाँ संबंधित पाठ पर ही आधारित हैं। इनका सतत अभ्यास करवाने का उत्तरदायित्व आपके ही सबल कंधों पर है।

पाठों में 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय' के अंतर्गत दी गई अध्ययन सामग्री भी क्षमता विधान पर ही आधारित है। ये सभी कृतियाँ पाठ के आशय को आधार बनाकर विद्यार्थियों को पाठ और पुस्तक के साथ बाहरी दुनिया में विचरण करने का अवसर प्रदान करती हैं। अतः शिक्षक/अभिभावक अपने निरीक्षण में इन कृतियों का अभ्यास अवश्य कराएँ। परीक्षा में इनपर प्रश्न पूछना आवश्यक नहीं है। विद्यार्थियों के कल्पना पल्लवन, मौलिक सृजन एवं स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु 'उपयोजित लेखन' दिया गया है। इसके अंतर्गत प्रसंग/ विषय दिए गए हैं। इनके द्वारा विद्यार्थियों को रचनात्मक विकास का अवसर प्रदान करना आवश्यक है।

विद्यार्थियों की भावभूमि को ध्यान में रखकर पुस्तक में मध्यकालीन कवियों के पद, दोहे, चौपाई, महाकाव्य का अंश साथ ही कविता, नई कविता, गीत, गजल, बहुविध कहानियाँ, हास्य–व्यंग्य, निबंध, संस्मरण, साक्षात्कार, एकांकी, यात्रावर्णन आदि साहित्यिक विधाओं का विचारपूर्वक समावेश किया गया है। इतना ही नहीं अत्याधुनिक विधा 'हाइकु' को भी प्रथमतः पुस्तक में स्थान दिया गया है। इसके साथ–साथ व्याकरण एवं रचना विभाग तथा मध्यकालीन काव्य के भावार्थ पाठ्यपुस्तक के अंत में दिए गए हैं, जिससे अध्ययन–अध्यापन में सरलता होगी।

पाठों में दिए गए 'भाषा बिंदु' व्याकरण से संबंधित हैं। यहाँ पाठ, पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यपुस्तकेतर भी प्रश्न पूछे गए हैं। व्याकरण पारंपरिक रूप से न पढ़ाकर कृतियों और उदाहरणों द्वारा व्याकरणिक संकल्पना तक विद्यार्थियों को पहुँचाया जाए। 'पठनार्थ' सामग्री कहीं न कहीं पाठ को ही पोषित करती है। यह विद्यार्थियों की रुचि एवं उनमें पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है। अतः इसका वाचन अवश्य करवाएँ। उपरोक्त सभी अभ्यास करवाते समय 'परिशिष्ट' में दिए गए सभी विषयों को ध्यान में रखना अपेक्षित है। पाठ के अंत में दिए गए संदर्भों से विद्यार्थियों को स्वयं अध्ययन हेतु प्रेरित करें।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, भाषाई खेलों, संदर्भ–प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है। आप सब पाठ्यपुस्तक के माध्यम से नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्वों, संवैधानिक मूल्यों के विकास के अवसर विद्यार्थियों को अवश्य प्रदान करें। पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित प्रत्येक संदर्भ का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभी शिक्षक इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे।

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	भारत महिमा	कविता	जयशंकर प्रसाद	१–२
२.	लक्ष्मी	संवादात्मक कहानी	गुरुबचन सिंह	३–९
३.	वाह रे ! हमदर्द	हास्य–व्यंग्य निबंध	घनश्याम अग्रवाल	१०–१४
४.	मन (पूरक पठन)	हाइकु	विकास परिहार	१५–१७
५.	गोवा : जैसा मैंने देखा	यात्रा वर्णन	विनय शर्मा	१८–२३
६.	गिरिधर नागर	पद	संत मीराबाई	२४–२६
७.	खुला आकाश (पूरक पठन)	डायरी अंश	कुँवर नारायण	२७–३२
८.	गजल	गजल	माणिक वर्मा	३३–३४
९.	रीढ़ की हड्डी	एकांकी	जगदीशचंद्र माथुर	३५–४१
१०.	ठेस (पूरक पठन)	आंचलिक कहानी	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	४२–४८
११.	कृषक का गान	गीत	दिनेश भारद्वाज	४९–५०

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	बरषहिं जलद	महाकाव्य अंश	गोस्वामी तुलसीदास	५१–५३
२.	दो लघुकथाएँ (पूरक पठन)	लघुकथा	नरेंद्रकौर छाबड़ा	५४–५७
३.	श्रम साधना	वैचारिक निबंध	श्रीकृष्णदास जाजू	५८–६४
४.	छापा	हास्य–व्यंग्य कविता	ओमप्रकाश 'आदित्य'	६५–६७
५.	ईमानदारी की प्रतिमूर्ति	संस्मरण	सुनील शास्त्री	६८–७३
६.	हम इस धरती की संतति हैं (पूरक पठन)	कव्वाली	उमाकांत मालवीय	७४–७५
७.	महिला आश्रम	पत्र	काका कालेलकर	७६–७९
८.	अपनी गंध नहीं बेचूँगा	गीत	बालकवि बैरागी	८०–८१
९.	जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ	साक्षात्कार	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	८२–८८
१०.	बूढ़ी काकी (पूरक पठन)	वर्णनात्मक कहानी	प्रेमचंद	८९–९६
११.	समता की ओर	नई कविता	मुकुटधर पांडेय	९७–९८
	व्याकरण एवं रचना विभाग तथा भावार्थ			९९–१०४